
Shri Chakrarajastotra

श्रीचक्रराजस्तोत्रम्

Document Information

Text title : chakrarAjastotra

File name : chakrarAjastotra.itx

Category : devii, dashamahAvidyA, stotra, devI

Location : doc_devii

Transliterated by : Sivakumar Thyagarajan shivakumar24 at gmail.com

Proofread by : Sivakumar Thyagarajan shivakumar24 at gmail.com

Latest update : March 23, 2014

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 22, 2023

sanskritdocuments.org

Shri Chakrarajastotra

श्रीयङ्गराजस्तोत्रम्



प्रोक्ता पञ्चदशी विधा मलात्रिपुरसुन्दरी ।
श्रीमलाषोडशी प्रोक्ता मलामावेश्वरी सदा ॥ १ ॥

प्रोक्ता श्रीदक्षिणा काली मलाराज्ञीति संज्ञया ।
var लोके ज्येष्ठा मलाराज्ञी नाम्ना दक्षिणकालिका ।
आगमेषु मलाशक्तिः ज्येष्ठा श्रीभुवनेश्वरी ॥ २ ॥

मलागुप्ता गुह्यकाली नाम्ना शास्त्रेषु कीर्तिता ।
मलोग्रतारा निर्दिष्टा मलाज्ञमेति भूतले ॥ ३ ॥

मलानन्दा कुब्जिका स्यात् लोकेऽत्र जगदम्बिका ।
त्रिशक्त्याद्याऽत्र यामुष्टा मलास्पन्दा प्रकीर्तिता ॥ ४ ॥

मलामलाशया प्रोक्ता बाला त्रिपुरसुन्दरी ।
श्रीयङ्गराजः सम्प्रोक्तस्त्रिभागेन मवेश्वरि ॥ ५ ॥


ब्रह्मीभूत पूज्य श्रीस्वामी विद्यारण्य की कृपा से प्राप्त

छिन्दी अनुवाद


पञ्चदशी विधा मलात्रिपुरसुन्दरी और श्रीमलाषोडशी विधा
सदैव मलामावेश्वरी कही गइ हैं । श्रीदक्षिणा काली को
मलाराज्ञी नाम से कडा गया है और श्री भुवनेश्वरी आगमों में
मलाशक्ति नाम से प्रसिद्ध हैं । शास्त्रों में गुह्यकाली नाम से
मलागुप्ता का वर्णन है और पृथ्वी पर मलोग्रतारा मलाज्ञमा
बताई गइ हैं । जगदम्बा कुब्जिका इस लोक में मलानन्दा हैं और
त्रिशक्त्यात्मिका आधा यामुष्टा मलास्पन्दा कही गइ हैं ।
बाला त्रिपुरसुन्दरी मलामलाशया कही गइ हैं । हे मवेश्वर!
इस प्रकार तीन भागों में श्रीयङ्गराज का वर्णन है ।

shrIvidyAsAdhanA p. 206

Encoded and proofread by Sivakumar Thyagarajan shivakumar24 at gmail.com

——
Shri Chakrarajastotra

pdf was typeset on December 22, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

